संपादक के नोट

मैं तुम सभी को मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता येशु मसीह के अतुलनीय नाम से अभिवादन करती हूँ। उसकी कृपा और दया तुम सब पर बनी रहे।
परमेश्वर ने हमें अनुग्रह का यह समय अपने पापों से पश्चाताप करने के लिए दिया है।
प्रकाशितवाक्य २रू२१ – मैंने उसे अवसर दिया कि पश्चाताप करे, पर वह अपने व्यभिचार से पश्चाताप करना नहीं चाहती। इस अनुग्रह समय के दौरान परमेश्वर हमारे दिलों में बात करता है और चाहता है की हम पश्चाताप करें। उत्पत्ति ६रू३ – तब यहोवा ने कहा, ‘मेरा आत्मा मनुष्य के साथ सदा विवाद करता न रहेगा, क्योंकि वह तो शरीर है। अब उसकी आयु एक सौ बीस वर्ष की होगी।’ लेकिन जो व्यक्ति अनुग्रह के इस समय को अस्वीकार करता है, उसपर हाय।
जब दाऊद ने गोलियत को मार डाला, स्त्रियों ने नाचा और गाया १ शमूएल १८रू७ – वे स्त्रियां नाचती और यह गीत गाती गईः ‘शाऊल ने मारा हज़ारों को, दाऊद ने मारा लाखों को।’ इस घटना ने राजा शाऊल के दिल में क्रोध और घृणा लाया। उस दिन से शाऊल ने क्रोध से दाऊद को देखने लगा। लेकिन उस रात और अगले दिन, परमेश्वर का न्याय शाऊल पर नहीं आया। १ शमूएल १८रू१० – दूसरे ही दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर की ओर से एक दुष्टात्मा शाऊल पर प्रबलता से उतरी, और वह अपने घर के बीच में चिल्लाने–चीखने लगा। शाऊल के हाथ में भाला था, और दाऊद प्रतिदिन के समान अपने हाथ से वीणा बजा रहा था। परमेश्वर ने शाऊल को रात से लेकर अगले दिन तक पश्चाताप करने के लिए समय दिया था।
प्रेरित पौलुस इफिसियों ४रू२६–२७ में कहता हैं – क्रोध तो करो पर पाप न करो। तुम्हारा क्रोध सूर्य अस्त होने तक बना न रहे। शैतान को अवसर न दो।
दो चोरों को येशु के दोनों ओर क्रूस पर चढ़ाया गया था। उस थोड़े से समय में जो उन्हें दिया गया था पश्चाताप करने के लिए, एक चोर ने उस समय को पश्चाताप करने के लिए इस्तेमाल किया, उसे परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त हुआ। लेकिन दूसरे चोर ने अनुग्रह के अपने समय पर ध्यान नहीं दिया और परमेश्वर ने उसे त्याग दिया।
फिरौन ने अपने हृदय को छह बार कठोर किया। निर्गमन ७रू१३–१४ – फिर भी, जैसा यहोवा ने कहा था फ़िरौन का हृदय कठोर बना रहा और उसने उनकी न सुनी। तब यहोवा ने मूसा से कहा, ‘फ़िरौन का हृदय हठी है। वह इस प्रजा को जाने नहीं देता।

निर्गमन ७रू२२ — तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपनी जादूगरी से ऐसा ही किया; फिर भी, जैसा कि यहोवा ने कहा था, फ़िरौन का हृदय कठोर बना रहा और उसने उनकी न सुनी।
निर्गमन ८रू१५ — परन्तु जब फ़िरौन ने देखा कि अब चैन मिल गया है तो जैसा कि यहोवा ने कहा था उसने अपना हृदय कठोर किया और उनकी न सुनी।
निर्गमन ८रू१९ — तब जादूगरों ने फ़िरौन से कहा, “इसमें तो परमेश्वर का हाथ है।” परन्तु जैसा कि यहोवा ने कहा था, फ़िरौन का हृदय कठोर ही बना रहा और उसने उनकी न सुनी।
निर्गमन ८रू३२ — तब फ़िरौन ने इस बार भी अपने हृदय को कठोर किया और उन लोगों को जाने न दिया।
बाद में प्रभु ने उसके मन को कठोर किया की वह पश्चाताप नहीं कर सका। वह दस विपत्तियां जो मिस्र पर आई, फिरौन को पश्चाताप करने के लिए अनुग्रह समय था।
कभी कभी, जब परमेश्वर हमें प्यार से, बीमारी और दुर्घटनाओं के माध्यम से सज़ा देता है, हमें इसे पश्चाताप करने के लिए परमेश्वर की ओर से दिए गए एक चेतावनी के रूप में लेना चाहिए।
परमेश्वर ने नीनवे को ४० दिन का अनुग्रह का समय पश्चाताप करने के लिए दिया।
योना ३रू३–१० — तब दूसरी बार यहोवा का यह वचन योना के पास पहंचाः “उठ और उस महानगर नीनवे को जा, और जो सन्देश मैं तुझे देने पर हूं वहां उसका प्रचार कर।” अतः यहोवा के वचन के अनुसार योना उठकर नीनवे को गया। नीनवे एक महानगर था, उसे पूरा घूमने में तीन दिन लगते थे। योना ने नगर की यात्रा आरम्भ की और एक दिन की दूरी तक यह प्रचार करता गया, “अब से चालीस दिन बाद ही नीनवे उलट दिया जाएगा।” तब नीनवे के लोगों ने परमेश्वर का विश्वास किया; उन्होंने उपवास की घोषणा की और बड़े से लेकर छोटे तक सब ने टाट ओढ़ा। जब यह समाचार नीनवे के राजा के पास पहंचा, तो उसने सिंहासन पर से उठकर अपनी राजसी वस्त्र उतार दिए और वह टाट ओढ़कर राख पर बैठ गया। फिर उसने यह घोषणा करवाईः “राजा और प्रधानों के आदेशानुसार नीनवें में न कोई मनुष्य, न कोई पशु, और न पशु–पक्षियों का झुण्ड कुछ चखे। वे न तो कुछ खाएं और न ही पानी पिएं। परन्तु मनुष्य और पशु दोनों टाट ओढ़ें, और लोग गिड़गिड़ाकर परमेश्वर की दुहाई दें कि प्रत्येक अपनी दुष्ट चाल से और अपने उपद्रव के कार्यों से पश्चाताप करे। कौन जाने परमेश्वर पलटकर दया करे और अपने भड़के हुए प्रकोप को हटा ले कि हम नाश न हों।” जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा कि वे अपनी दुष्ट चाल से फिर गए हैं, तब दया करके उस विपत्ति को जिसे उसने उन पर डालने की घोषणा की थी, आने न दिया।

उसी तरह से, नूह ने प्रचार किया कि लोगों को पश्चाताप करना चाहिए। कोई दिन या समय पश्चाताप के लिए दिया नहीं गया था। लेकिन जो लोग बुराई से प्यार करते थे अनुग्रह के समय को तुच्छ जाना।
एक किसान जिसने एक अंजीर का पेड़ लगाया था कोई फल नहीं मिला। उसने तीन साल तक इंतजार किया लेकिन फिर भी कोई फल नहीं मिला। मालिक ने पेड़ को काट गिराने के लिए कहा, लेकिन किसान ने एक और वर्ष के लिए पूछा। लूका १३रू६–९ – वह यह दृष्टान्त कहने लगाः “किसी मनुष्य ने अंगूर की बारी में एक अंजीर का पेड़ भी लगा रखा था; वह इसमें फल ढूंढ़ने आया पर उसे कुछ न मिला। तब उसने माली से कहा, ‘देख, मैं तीन वर्षों से इस अंजीर के पेड़ में फल ढूंढ़ता रहा हूँ पर कुछ नहीं पाता। इसे काट डाल। यह भूमि को व्यर्थ क्यों घेरे रहे?’ उसने उसको उत्तर दिया, ‘स्वामी, इस वर्ष भी इसे रहने दे, मैं इसके चारों ओर खोदकर खाद डालूँगा। अगले वर्ष यदि यह फल दे तो ठीक है, अन्यथा इसे काट डालना’।” परमेश्वर ने तीन साल तक अनुग्रह दिया उसपर एक साल अधिक। परमेश्वर की दया के कारण, हमें अनुग्रह पर अनुग्रह प्राप्त होता हैं। यूहन्ना १रू१६ – क्योंकि उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने पाया, अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।
आज हम अनुग्रह के समय में हैं, इसलिए तुम्हारे दिलों को परमेश्वर की ओर फेरों। अगर तुम्हारे दिल में कोई खुशी और शांति नहीं है, परमेश्वर के क्रूस की ओर आओं और तुम्हें उसकी अनुग्रह, शांति और आनंद प्राप्त होगी। प्रभु तुम्हारी मदद करें तुम्हारे सभी कमजोरियों पर काबू पाने के लिए और प्रभु के साथ एक होने के लिए।

हमारा अच्छा प्रभु तुम्हें आशीष दें।

उसकी सेवा में तुम्हारी,

पास्टर सरोजा म.

प्रभु हमारे जीवन का चट्टान है।

भजन संहिता १६रू८ – मैंने यहोवा को निरंतर अपने सम्मुख रखा है; इसलिए कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है, मैं कभी न डगमगाऊंगा। अगर कोई चीज़ मज़बूत नहीं है, वह थरथराता और हिलता है, अगर यह व्यवस्थित रुप से पकड़ा नहीं गया हो। उसी तरह, अगर हम परमेश्वर को अपने दाहिने हाथ पर रखें और विश्वास करते है, उसकी उपस्थिति हमारे जीवन में है, मुसीबत या संकट के समय में हम कभी हिलाए या विचलित नहीं किए जाएंगे।
हम पवीत्र शास्त्र में प्रेरितों के काम २रू२५ में पढ़ें – क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है : ‛मैं सर्वदा प्रभु की ओर निहारता रहा, क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है जिस से मैं डगमगा न जाऊं। एक बार फिर से दाऊद पुष्टि करता है कि उसने हमेशा प्रभु को उसके सामने रखा है, उसके दाहिने हाथ पर, इसलिए प्रभु हर समय हमेशा उसके पास था। हम भी हमारे जीवन में हमारे प्रभु की उपस्थिति का अनुभव करना चाहिए और उसे हमारे पास रखना चाहिए। तो जब हम उसे पुकारते है, जब हम स्तुति और उसकी आराधना करते है, वह दूर का परमेश्वर नहीं है, लेकिन हमारे निकट का परमेश्वर है। हमें विश्वास करना चाहिए कि वह हमारे दाहिने हाथ पर है और लगातार हमें देख रहा हैं। भजन संहिता १४५रू१८ कहता है – जो उसे पुकारते हैं अर्थात जो उसको सच्चाई से पुकारते हैं वह उन सब के निकट रहता है। यहाँ वचन को दो भागों में बांटा गया है – प्रभु उन सब के करीब है जो उसे पुकारते हैं और जो ३सत्य३ से उसे पुकारते हैं। एक सच्चा दिल होना महत्वपूर्ण है जब हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं, यह विश्वास करते हए कि वह हमारी समस्याओं, दर्द और दुख को जानता है – वह अकेले इसे हल कर सकता हैं। इसलिए जो लोग सत्य में प्रभु को पुकारते हैं, वह जवाब देगा। चलो देखते हैं किनका जीवन थरथराता नहीं है और किनको हिलाया नहीं जा सकता है? पवित्र शास्त्र में, हम भजन संहिता २१रू७ में पढ़ें हैं – क्योंकि राजा तो यहोवा पर भरोसा करता है, और परमप्रधान की करूणा से वह डिगने नहीं पाएगा। यहाँ तक कि राजाओं, हालांकि उनके राज्य की देखभाल करने के लिए उनके पास एक विशाल सेना है, बाइबल में हम देखतें हैं राजाओं, उनकी युक्ति और शक्ति के लिए प्रभु पर विश्वास किया, हमेशा विजय हासिल की। लेकिन राजाओं जिन्होंने उनका विश्वास सेनाओं पर डाला, कई बार हार गए। हमें कोई भी विजय, जीत नहीं सकते हैं, पर हमारा विश्वास जो केवल परमेश्वर पर हैं। अपने ही घमंड़ और बुद्धि की वजह से कईयों का जीवन गिर जाता हैं, लेकिन दीन और नम्र जो परमेश्वर को खोजते हैं कभी हिलाए नहीं जाएंगे। हम राजनीतिक दलों के पतन को देखते हैं, अधिकार में लोगों

को उनके पदों को खोना पड़ता हैं, बाइबिल में भी दोहराया गया है कि स्वर्ग और पृथ्वी टल जाएगा। लेकिन जो लोग प्रभु पर भरोसा रखते है, कभी लज्जित नहीं होंगे या हिलाए नहीं जाएंगे। हमें अपने जीवन में सावधान रहना चाहिए, हमें हमारे पापों को परमेश्वर और हमारे बीच में आने नहीं देना चाहिए। हमें अत्यंत भय के साथ हमारे जीवन को व्यतीत करने के लिए सीखना चाहिए, क्योंकि हमारा अच्छा प्रभु हर समय हमें देखता है। भजन संहिता ४६रू१–६ कहता है – परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट के समय तत्पर सहायक। इसलिए हम नहीं डरेंगे, चाहे पृथ्वी उलट जाए, और पर्वत समुद्र–तल में जा पड़ें, चाहे समुद्र गरजे और फेन उठाए, और उसके उमड़ने से पर्वत कांप उठें। एक नदी है जिसकी धाराएं परमेश्वर के नगर को, अर्थात परमेश्वर के पवित्र निवास्थान को हर्षित करती हैं। परमेश्वर उस नगर में है, वह कभी टलने का नहीं; पौ फटते ही परमेश्वर उसकी सहायता करेगा। जातियों ने हुल्लड़ मचाया, राज्य लड़खड़ाए; वह बोल उठा, पृथ्वी पिघल गई। यह शहर या देश कौन है – तुम और मैं। परमेश्वर हमारे इस शहर/देश में वास करना चाहता है। हाँ, जब परमेश्वर हमारे दाहिने हाथ पर है, हम हिलाए नहीं जाएंगे। हमारी दुर्बलता में, वह हमारा शरणस्थान और बल है। हमें केवल उसे डरना चाहिए। जैसे पवित्र शास्त्र कहता है – सब कुछ नष्ट हो जाएगा, पृथ्वी पिघल जाएगा, लेकिन जब परमेश्वर हमारे दाहिने हाथ पर है, हम इस प्रकार के आफत से हिलाए नहीं जाएंगे। हमारे प्रभु पर जो अपना विश्वास और भरोसा रखते है, प्रभु उनका ख्याल रखेगा।

यशायाह ६०रू१–४ कहता है – ‘उठ, प्रकाशमान हो, क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तुझ पर उदय हुआ है। देख, पृथ्वी पर अन्धियारा और जाति जाति के लोगों पर घोर अन्धकार छा जाएगा; परन्तु तुझ पर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रकट होगा। देश देश के लोग तेरे प्रकाश की ओर तथा राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे। चारों ओर अपनी दृष्टि उठाकर देखः वे सब इकट्ठे होकर तेरे पास आ रहे हैं। तेरे पुत्र दूर देश से आएंगे, और तेरी पुत्रियां हाथों–हाथ पहुंचाई जाएंगी। हालांकि इस पृथ्वी पर घोर अंधकार हो जाएगा, हमारा प्रभु जो ‘जगत की ज्योति’ है, हमारे साथ है और संसार को प्रकाशमान कर देगा। अपने बच्चों के बीच में वास करने की उसकी हमेशा की इच्छा है जहां उसके बच्चे हैं, इसलिए वहा वास करके और उनके जीवन में उजियाला लाएगा।

१ कुरिन्थियों ३रू१६ कहता है – क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है? हाँ, हम उसके मन्दिर हैं, उसके शहर, उसके देश, प्रभु हम में वास करना चाहता है। वह चाहता है कि जो उस पर विश्वास करते हैं उनपर उसकी आत्मा को उंडेले। वह हमारे करीब है और हमारे मध्य रहता है, हमें विश्वास करना चाहिए कि वह हमारे दाहिने हाथ पर बैठा है और

हम पर निगरानी रखता है। राजाएं गिर सकते हैं, राज्यों उखड़ सकती हैं, राजनीतिक दलों अपने सत्तारूढ़ शक्तियां खो सकते हैं, स्वर्ग और पृथ्वी टल जाएंगे, अंधेरा पृथ्वी पर चपेट सकता हैं, लेकिन प्रभु की आत्मा जो हम पर डाला जाता है, कभी नहीं थमेगा। सपन्याह ३रू१७ कहता है – यहोवा तेरा परमेश्वर तेरे मध्य है, वह बचानेवाला पराक्रमी योद्धा है। वह तेरे कारण हर्षित होगा, वह अपने प्रेम के कारण चुप रहेगा, वह हर्ष से जयजयकार करता हुआ तेरे कारण आननदित होगा। जब शक्तिशाली प्रभु हमारे साथ है, हम कभी शर्मिंदा नहीं होंगे। वही है, जो हमें दुष्ट के सभी फन्दों से बचाता है, उसका प्यार हमेशा हम पर बना रहेगा, हम किसी भी तरह से लज्जित नहीं किए जाएंगे।

किसके जीवन में परीक्षणों और क्लेश नहीं है, किसका जीवन दर्द और दुख के बिना है? लेकिन जब परमेश्वर हमारे साथ है, कुछ भी चीज़ हमें कोई हानि नहीं कर सकती। जब भी हम उसकी स्तुति और आराधना करते है, हमें विश्वास करना चाहिए कि वह हमारे पास है और वह हमारी हर प्रार्थना सुनेगा। हमें परमेश्वर को हमारे जीवन में पहला स्थान देना चाहिए। केवल तभी वह हर समय हमें आशीष देगा। भजन संहिता ६३रू१ कहता है – हे परमेश्वर, तू ही मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा; सूखी और प्यासी, हां, निर्जल भूमि पर मेरा प्राण तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है। भजन संहिता ६२रू६ कहता है – वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार, हां, मेरा दृढ़ गढ़ हैः मैं न डिगूंगा। हम यूसुफ के जीवन को देखते हैं – वह अपने परिवार के द्वारा छोड़ दिया गया था, उसके भाइयों ने उसे बेचा, उसे बन्दीगृह में डाल दिया गया था, उसे गलत तरीके से उसके मालिक की पत्नी द्वारा फंसाया गया...लेकिन उसके सभी परीक्षणों और क्लेशों से, उसने केवल प्रभु परमेश्वर की ओर देखा उसे राहत देने के लिए। हमारा परमेश्वर जो उसके दिल को जानता था और बारीकी से उस पर निगरानी रखे हुए था अंत में उसे आशीर्वाद दिया और उसे अपने सभी परीक्षणों में जीत दे दी। भजन संहिता १०५रू१८ – १९ कहता है – लोगों ने उसके पैरों में बेड़ियां डालकर उसे पीड़ित किया, वह लोहे की ज़ंजीरों से तब तक जकड़ा रहा, जब तक कि उसके वचन पूरे न हो गए और यहोवा के वचन ने उसे सिद्ध न किया। यूसुफ का विश्वास और भरोसा केवल प्रभु परमेश्वर पर था, नहीं किसी आदमी पर। हाँ, हमें प्रभु को ᳚हमारे जीवन का चट्टान᳚ बनाना चाहिए, हम कभी हिलेंगे नहीं क्योंकि वह हर स्थिति में हमारा रक्षक है।

भजन संहिता ११५रू१०–११ कहता है – हे हारून के घराने, यहोवा पर भरोसा रख – वह उनकी सहायता और उनकी ढाल है। तुम जो यहोवा का भय मानते हो, यहोवा पर भरोसा रखो – वह उनकी सहायता और उनकी ढाल है। जो लोग प्रभु

पर विश्वास करते हैं, उनका मदद केवल उसके पास से आएगा, वह उनका सहायक और ढाल होगा और हमें जीवन की सभी मुसीबतों से बचाएगा। भजन संहिता १३१रू३ कहता है – हे इस्राएल, अब से लेकर सदा सर्वदा यहोवा पर ही आशा लगाए रह। लोग हमारे जीवन में आएंगे, वे जाएंगे, लेकिन केवल हमारा प्रभु परमेश्वर हमारे साथ सदा बना रहेगा। चाहे हमारे जीवन में तूफान या सुनामी हो, हमारे प्रभु की मदद हमारे लिए पर्याप्त है। एक बार फिर आज, हमें जांच करे, यदि हमारा विश्वास और आशा आदमी पर है। लेकिन अगर हम परमेश्वर पर हमारा भरोसा और विश्वास रखते हैं, हमारा प्रभु परमेश्वर कभी नहीं बदलेगा या हमें कभी असफल नहीं करेगा। उदाहरण के लिए बंदर और बिल्ली की कहानी, जब मां बंदर पेड़ से पेड़ पर कूदती है, शिशु उसका पेट कसकर पकड़ता है और माँ बिल्ली उसके बच्चे को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है, वह अपने मुंह में सुरक्षित रूप से बच्चे को रखती है। उसी तरह से, हम बंदर की तरह कस कर प्रभु को पकड़ना चाहिए और प्रभु हमें सुरक्षित रूप से बिल्ली की तरह कसकर पकड़ेगा। नीतिवचन २४रू१० कहता है – यदि तू विपत्ती के दिन साहस छोड़ दे, तो तेरा सामर्थ बहुत कम है। हमें हमारे संकट के समय में अधिकता से प्रभु को पकड़े रहना चाहिए, वह हमारे सबसे करीब है जब हम अपने जीवन में परीक्षणों से गुज़र रहे है। नीतिवचन १२रू३ कहता है – दुष्टता करने के द्वारा कोई मनुष्य स्थिर नहीं होता, परन्तु धर्मियों की जड़ कभी उखड़ने की नहीं। उदाहरण के लिए एक पेड़ में, कुछ पेड़ के हिस्सों को हम देख सकते हैं और कुछ हिस्से मिट्टी के नीचे हैं जिसे हम नहीं देख सकते। हम सुंदर पेड़ को देख सकते हैं, उसके पत्तियां, फूल और फल। लेकिन उसकी ॅजड़ॅ जो उस पेड़ को मज़बूती से पकड़े रखती है और जो पेड़ का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, ज़मीन के नीचे रहती है और देखा नहीं जा सकता। जड़ पेड़ का पोषण करता है और उसके अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखता है। एक समान्य तरीके से, हमारा जीवन लोगों द्वारा देखा जा सकता है, लेकिन विश्वास जो हमारे परमेश्वर पर है केवल हमारे प्रभु द्वारा देखा जा सकता है, आदमी नहीं। हम दिखावा करके और लोगों को दिखा सकते हैं कि हम परमेश्वर का भय मानते है, लेकिन केवल हमारा प्रभु परमेश्वर सच जानता है ... .. अगर हम उसे ड़रते है या नहीं और क्या हम उसे प्यार करते हैं या नहीं! हमारे भीतरी मनुष्य को केवल परमेश्वर जानता है। अगर हम गहराई से प्रभु में जड़ें हैं, और उसकी पवित्र आत्मा हमारे जीवन को चलाता है और हमारा मार्गदर्शन करता है, हमारा जीवन कभी हिलेगा नहीं दुनिया में किसी भी प्रकार की अप्रिय घटनाओं से, क्योंकि हमारा विश्वास और भरोसा केवल उस ही में जड़ा हैं।

इब्रानियों १२रू१५ कहता है – ध्यान रखो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित न रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट का कारण न बने, जिससे कि बहुत

लोग अशुद्धहो जाए। हमें अपने जीवन में कड़वाहट उमड़ने कभी नहीं देना चाहिए, हमारे भीतर ई ष्या कभी नहीं होना चाहिए क्योंकि ई ष्या हमारे जीवन में कड़वाहट लाता है। इसके बजाय हमारा जीवन गहराई से परमेश्वर और पवित्र आत्मा के साथ जड़ा होना चाहिए। पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर के साथ एक होने के लिए मदद करता है, वह हमें धार्मिक्ता में चलाता है, हमें गलत से सही सिखाता है, हमें जीवन में गलत संगति से दूर रखता है। हमें पवित्र आत्मा को हमेशा हमारे भीतर रहने देना चाहिए। भजन संहिता ५२रू८ कहता है – परन्तु मैं तो परमेश्वर के भवन में जैतून के हरे–भरे वृक्ष के समान हूं; मैं परमेश्वर की करूणा पर सदा–सर्वदा भरोसा रखता हूं। जब हम हमारे जीवन में पवित्र आत्मा को काम करने देते हैं, हम हमेशा खिले रहेंगे और जैतून के पेड़ की तरह हरें रहेंगे – हरे भरे और फलदायक। भजन संहिता ११२रू६ कहता है – क्योंकि वह कभी न डिगेगा, धर्मी का स्मरण सदा तक बना रहेगा। एक बार फिर प्रभु कहता हैं, जो लोग धर्मी हैं हमेशा उसे याद रहेंगे और उनके जीवन के किसी भी स्थिति में ना हिलेंगे ना ही डगमगाएंगे। जो लोग उस पर भरोसा रखते है, कभी लज्जित नहीं किए जाएंगे। लूका २२ में, हम देखते हैं उन सब लोगों को, जो येशु के साथ थे, जिन्होंने, उसने जो वचन प्रचार किया सुना और उस से प्यार करते थे, जिन्होंने उसका आशीर्वाद प्राप्त किया और चंगे हुए और एक बार फिर पूर्ण बनाए गए। यह वही लोग थे जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था। आज, हम उन लोगों की तरह नहीं होना चाहिए। उस दिन के बारे में सोचो जब हम जकड़ें जाएंगे और जैसे हमने भजन संहिता ४६रू१ में पढ़ां हम उसके दूसरे आने के दिन के लिए कैसे तैयारी कर सकते हैं, हम उन २ लोगों की तरह न हो जिन्होंने उसके साथ खाया पिया, उसके उपदेशों को सुना और उस से चंगाई प्राप्त किया....लेकिन अंत में उसे इनकार कर दिया और उसे क्रूस पर चढ़ाया।

परिक्षा के बाद, हम टेलीविजन पर देखते हैं, १० वीं और १२ वीं कक्षा के परीक्षा का परिणाम की घोषणा की जाती है। सभी छात्रों को जो सबसे ऊपर है टीवी पर दिखाया जाता हैं। इसी तरह, हमें भी न्याय के दिन के लिए तैयार रहना चाहिए जब प्रभु हमारे नाम से हमें बुलाएगा और हमें न्याय के लिए उसके सामने खड़ा करेगा। क्या हम उस दिन के लिए तैयार हैं? अब हमें, प्रभु के दूसरा आने के लिए लगन से अपने आप को तैयार करना हैं। हमें हमारे सामने सदा प्रभु को रखना हैं क्योंकि जब वह हमारे दाहिने हाथ पर है, हमारे जीवन के किसी भी परिस्थिति में हम ना हिलेंगे ना ही डगमगाएंगे।

पास्टर सरोजा म.